Seventeenth Loksabha

an>

Title: Need to conserve ancient ponds in Tikamgarh Parliamentary Constituency-laid.

डॉ. वीरेन्द्र कुमार (टीकमगढ़): बुन्देलखण्ड क्षेत्र अंतर्गत मेरे संसदीय क्षेत्र के टीकमगढ़ एवं निवाड़ी जिले में प्राचीन समय में शासकों के द्वारा 1100 से अधिक चंदेलकालीन तालाबों का निर्माण कराया गया था। इन तालाबों का निर्माण लगभग 9वीं से 12वीं सदी के बीच चंदेल शासकों के द्वारा कराया गया और ये सभी तालाब चंदेल राजाओं की तकनीकी सूझबूझ के अद्वितीय उदाहरण हैं। ये चंदेलकालीन तालाब बुन्देलखण्ड क्षेत्र की पारंपरिक धरोहर हैं। इन तालाबों को बनाते समय यह ध्यान में रखा गया कि बारिश के पानी की एक-एक बूंद को संग्रहित किया जा सके। इनमें कैचमेंट एरिया और कमांड का बेहतरीन तालमेल निर्धारित किया गया था। किन्तु इन तालाबों को पर्याप्त संरक्षण न मिलने के कारण वर्तमान कुछ चंदेलकालीन तालाब ही शेष बचे हैं। अधिकांश तालाब अतिक्रमण की चपेट में आकर समाप्त हो चुके हैं। इन शेष बचे तालाबों के लिए विशेष कार्य योजना बनाकर संरक्षण देने की आवश्यकता है।

वर्तमान में जलशक्ति मंत्रालय के राष्ट्रीय जल मिशन के अंतर्गत "कैच द रेन" अभियान शुरू किया गया है, जिसका उद्देश्य जल संरक्षण और वर्षा के जल को संग्रहित करने के लिए लोगों को प्रेरित करना है। इसी दिशा में कार्य करते हुए टीकमगढ़ के चंदेलकालीन तालाबों को संरक्षण प्रदान किया जाए, जिससे अधिक से अधिक मात्रा में वर्षा के जल को इन तालाबों में संग्रहित किया जा सके। इन तालाबों में जल भराव से न केवल क्षेत्र के किसानों को सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध होगा, बल्कि भूमि की नमी और भू-जल स्तर में भी वृद्धि होगी। साथ ही आपसे अनुरोध है कि बुन्देलखंड में बने इन तालाबों को एक दूसरे से जोड़ने के लिए चंदेल काल में जो पद्धति अपनाई गई थी उसके अनुसार एवं टीकमगढ़ जिले में बुन्देलखण्ड पैकेज के अंतर्गत चल रही नदी तालाब जोड़ो योजना (हरपुरा - बीयर), जिसके पहले चरण में 11 तालाबों में पानी पहुंचाने की योजना बनाई गई थी, जिससे कि सिंचाई के लिए और निस्तार के लिए जल की उपलब्धता सुनिश्चित होनी थी, जिसका कार्य रूका हुआ है, इस योजना का पुनरीक्षण करवाकर इसे पूर्णता की ओर ले जाना आवश्यक है।